ग्रीस संकट

2007 से जारी विश्व आर्थिक संकट 8 वर्ष बीत जाने के बावजूद समाप्त होने का नाम नहीं ले रहा है। साम्राज्यवादियों के सारे खुशनुमा दावे एक के बाद एक धूल चाट रहे हैं। इन 8 वर्षों में संकट ने अमेरिका से शुरू होकर क्रमशः पूरी दुनिया को अपनी जद में ले लिया। आज इस संकट से कोई देश अछूता नहीं है। फिर भी यह कहना गलत नहीं होगा कि फिलहाल संकट सबसे घनीभूत रूप में दक्षिण यूरोप के देशों में अभिव्यक्त हो रहा है। यूरोपीय संघ और यूरो क्षेत्र में शामिल होने वाले दक्षिण यूरोप के देशों स्पेन, पुर्तगाल, इटली और ग्रीस की अर्थव्यवस्था संकट के चलते बुरी तरह से प्रभावित हुई है। इसमें भी सबसे गम्भीर स्थिति ग्रीस की है जहां कि सरकार को दिवालिया होने से बचने के लिए पिछले पांच वर्षों में 3 बार यूरोपीय संघ, यूरोपीय केन्द्रीय बैंक व अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष की तिकड़ी से कड़ी शर्तों पर कर्जा लेना पड़ा है जहां आर्थिक संकट ने राजनीतिक संकट को पैदा कर दिया है। इस सबके बावजूद स्थिति में सुधार के कोई संकेत दिखलाई नहीं दे रहे हैं। गहराते जा रहे ग्रीस के संकट ने इसके यूरोपीय संघ व यूरो क्षेत्र में बने रहने पर प्रश्न चिह्न खड़े कर दिये हैं। इसके साथ ही प्रश्न चिह्न यूरोपीय संघ की पूरी परियोजना पर भी खड़े हो रहे हैं।

A. ग्रीस : मौजूदा तस्वीर

अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष द्वारा जारी वर्ल्ड इकॉनॉमिक आउटलुक रिपोर्ट (अक्टूबर 2015) के अनुसार ग्रीस की अर्थव्यवस्था से जुड़े कुछ आंकड़े तालिका-1 में दिये गये हैं।

तालिका-1

ग्रीस की अर्थव्यवस्था से जुड़े कुछ आंकड़े													
											अनुमान		
मद	देश	औसत	2007	2008	2009	2010	2011	2012	2013	2014	2015	2016	2020
		1997.2006											
(1) वास्तविक जीडीपी वृद्धि दर	यूरो क्षेत्र	2.3	3.0	0.5	-4.6	2.0	1.6	-0.8	-0.3	0.9	1.5	1.6	1.6
	ग्रीस	4.1	3.5	-0.4	-4.4	-5.4	-8.9	-6.6	-3.9	0.8	-2.3	-1.3	2.4
(2) उपभोक्ता मूल्य (% वार्षिक परिवर्तन)	यूरो क्षेत्र	2.0	2.2	3.3	0.3	1.6	2.7	2.5	1.3	0.4	0.2	1.0	1.7
	ग्रीस	3.6	2.9	4.2	1.2	4.7	3.3	1.5	-1.2	-1.5	-0.4	0.0	1.4
(3) चालू खाता संतुलन (GDP का प्रतिशत)	यूरो क्षेत्र		0.1	-1.6	-0.2	0.1	0.1	1.2	1.8	2.0	3.2	3.0	2.3
	ग्रीस		-14.0	-14.5	-10.9	-10.1	-9.9	-2.5	0.6	0.9	0.7	1.5	-0.2
(4) बेरोजगारी की दर	यूरो क्षेत्र										10.2	9.6	9.2
	ग्रीस										26.5	26.8	27.1

स्रोत : वर्ल्ड इकॉनामिक आउटलुक, अक्टूबर 2015, तालिका 1.1.1, A2. A6, A11

तालिका-1 ग्रीस में संकट की गम्भीरता को दिखला देती है। वैसे तो संकट का शिकार समूचा यूरो क्षेत्र है पर उसकी तुलना में ग्रीस की स्थिति कहीं ज्यादा बुरी है। आर्थिक विकास दर 2008 से लगातार गिरती चली गयी है। 2013 में 2007 की तुलना में ग्रीस की अर्थव्यवस्था 23.5% सिकुड़ चुकी थी। जबकि यही आंकड़ा अन्य संकटग्रस्त देशों स्पेन के लिए 5.5%, पुर्तगाल 7.4%, इटली 7.8% व आयरलैण्ड के लिए 5.0% था। चालू खाता संतुलन की ऋणात्मक राशि दिखला रही है कि ग्रीस की सरकार काफी समय से आय की तुलना में कहीं ज्यादा खर्च कर रही थी। अर्थव्यवस्था के सिकुड़ने का सीधा असर उपलब्ध रोजगारों की गिरावट के रूप में सामने आया और 2015 में बेरोजगारी दर 26.5% तक जा पहुंची।

चालू बाजार कीमतों पर ग्रीस का सकल घरेलू उत्पाद 2014 में 179 अरब यूरो था जो कि वर्ष 2003 के स्तर पर जा पहुंचा था। प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद को यदि यूरोपीय संघ-28 के लिए 100 मान लिया जाय तो ग्रीस के लिए यह 2003 में 93 था जो गिरकर 2013 में 73 रह गया। ग्रीस पर सरकारी कर्ज (सकल घरेलू उत्पाद के % में) 2011 में 171.3, 2012 में 156.9, 2013 में 175.0, 2014 में 177.1 था। (देखें ग्राफ-1) यूरोपीय संघ के 28 देशों में सरकारी कर्ज के मामले में ग्रीस सबसे ज्यादा संकट ग्रस्त है।

ग्राफ -1

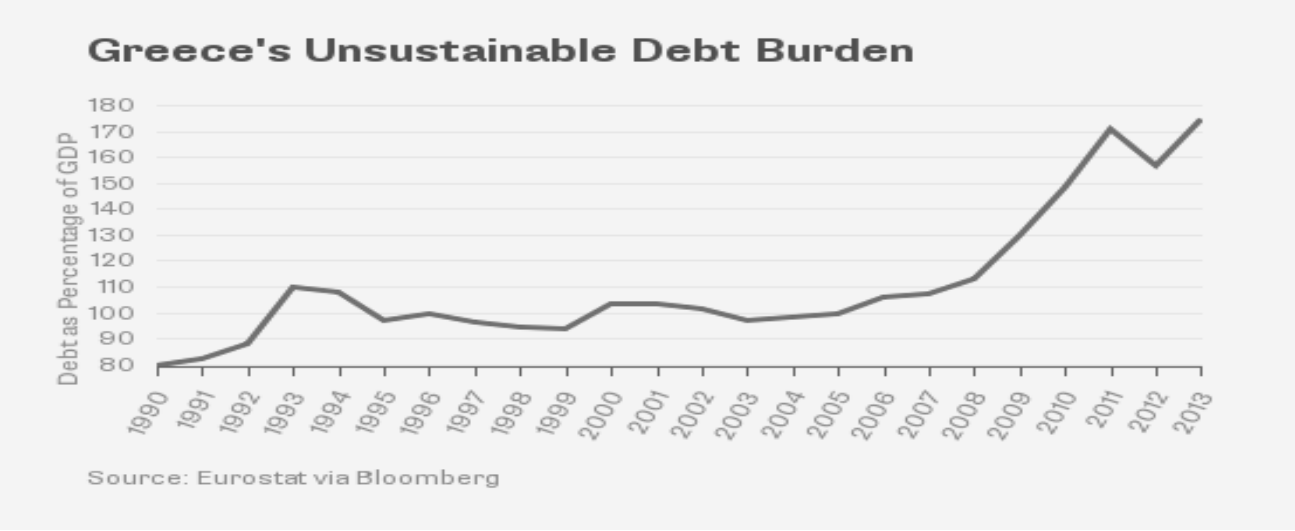

ग्राफ -2

ग्रीस : प्रमुख सेक्टरों द्वारा जोड़ा गया मूल्य

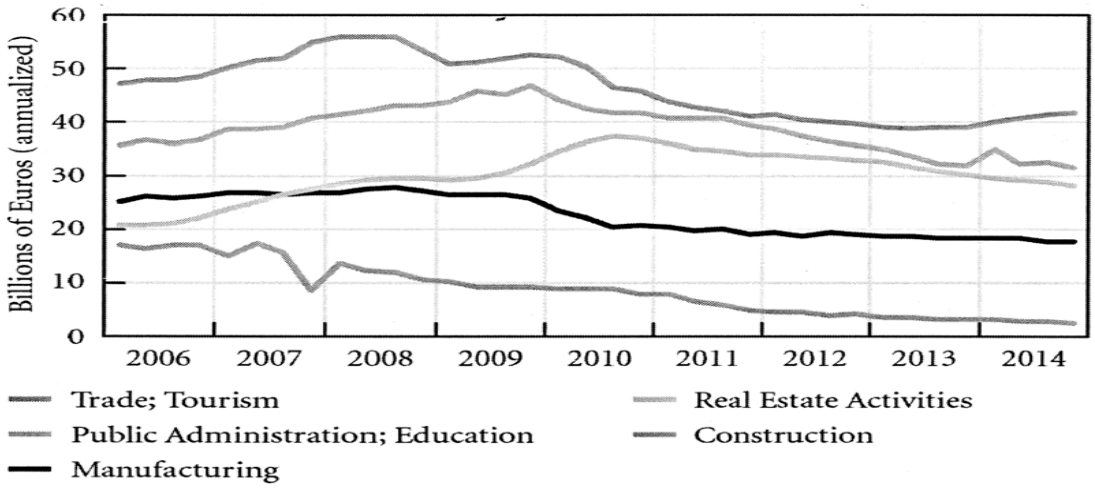

ग्राफ -3

ग्रीस : मजदूरी सूचकांक (2006=100)

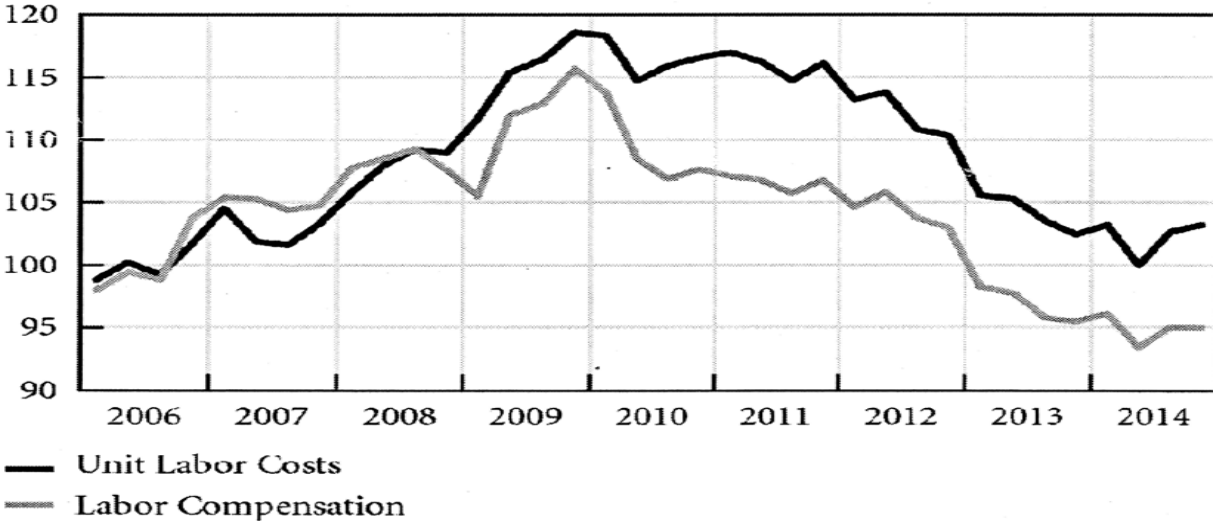

यह कर्ज संकट ही था जिसने ग्रीस के संकट को 2009 में सबसे प्रमुखता से उजागर किया था। कर्ज की भारी भरकम मात्रा के साथ आर्थिक विकास की ऋणात्मक वृद्धि दर ग्रीस की सरकार को उस दिशा में ले गयी जहां सरकार के सामने दिवालिया होने का खतरा पैदा हो गया। उसके बाद यूरोपीय संघ, यूरोपीय केन्द्रीय बैंक और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष द्वारा ग्रीस को इस कर्ज संकट से उबारने के नाम पर तीन बार (2010, 2012 व 2015 में) बेल आउट पैकेज भी ऋण के रूप में दिये गये और साथ ही ग्रीस पर आस्टरिटी (कटौती कार्यक्रमों) उपायों के जरिये अपना बजट घाटा व कर्ज का स्तर नीचे लाने की शर्त भी थोप दी गयीं। इसके साथ पिछले 5 वर्षों में भारी पैमाने पर जारी कटौती कार्यक्रमों ने ग्रीस की जनता के जीवन स्तर, उनकी क्रय शक्ति को नीचे गिराया है। सामाजिक सुरक्षा की मदों में कटौती के साथ सरकारी संस्थानों के निजीकरण को बढ़ावा दिया गया। युवा बेराजगारी 50% से ऊपर जा चुकी है। पर इस सबसे ग्रीस की अर्थव्यवस्था में कोई सुधार नहीं हो रहा है। हां बजट घाटा जरूर कम हो चुका है। इन कटौती कार्यक्रमों ने दरअसल अर्थव्यवस्था के सिकुड़ने में मदद कर कर्ज संकट को जस का तस बरकरार रखा है।

ग्राफ-2 ग्रीस की अर्थव्यवस्था के प्रमुख क्षेत्रों व्यापार, पर्यटन, मैनुफैक्चरिंग, रीयल स्टेट, प्रशासन, शिक्षा, निर्माण आदि में लगातार जारी गिरावट को प्रदर्शित करता है तो ग्राफ-3 ग्रीस में घटती मजदूरी व मजदूरों को मिलने वाले मुआवजे में कटौती को प्रदर्शित करता है।

साम्राज्यवादी तिकड़ी ग्रीस की अर्थव्यवस्था के संकट के लिए लगातार झूठ प्रदर्शित करती रही हैं कि अगर ग्रीस सरकार कटौती कार्यक्रम ठीक से चलाये, अपने यहां की टैक्स की दरों को ऊंचा करें और साथ ही निजीकरण की नीति को ठीक ढंग से लागू करे तो ग्रीस संकट से उबर जायेगा। मौजूदा संकट के लिए वे ग्रीस की सरकार द्वारा पूर्व में आय की तुलना में किये गये ज्यादा खर्च को जिम्मेदार ठहरा अर्द्धसत्य बयां करती हैं।

वास्तव में ग्रीस के मौजूदा संकट के कारण कहीं ज्यादा गहरे हैं ये ग्रीस के आर्थिक विकास की ऐतिहासिक प्रक्रिया में छिपे हैं। जिसे ध्यान में रखे बगैर ग्रीस के मौजूदा संकट को नहीं समझा जा सकता। साथ ही ग्रीस का संकट यूरो क्षेत्र के मौजूदा संकट से भी जुड़ा हुआ है। इसीलिए, यूरो क्षेत्र तक के यूरोप के ऐतिहासिक सफर को समझे बिना ग्रीस के वर्तमान संकट को हम नहीं समझ सकते। पहले हम यूरो क्षेत्र की विकास प्रक्रिया को लेंगे और फिर ग्रीस की विकास प्रक्रिया को।

B. यूरोपीय यूनियन व यूरो क्षेत्र की विकास की प्रक्रिया

यूरोप के एकीकरण की प्रक्रिया की शुरुआत द्वितीय विश्व युद्ध की समप्ति के तुरंत बाद ही हो गयी थी। यह वह समय था जब यूरोप के सभी प्रमुख देश युद्ध की तबाही से उबरने का प्रयास कर रहे थे। इसके साथ ही उनके सिर पर कम्युनिज्म का खतरा भी मंडरा रहा था। यूरोप के पुनर्निर्माण में अमेरिकी पूंजी निवेश एक बड़ी भूमिका निभा रहा था।

50 के दशक की शुरुआत में फ्रांसिसी व जर्मन एकाधिकारी बुर्जुआ वर्ग ने कोयले व स्टील पर अपने नियंत्रण को मजबूत बनाने के लिए यूरोपीय कोल एण्ड स्टील इकॉनामिक कम्युनिटी (ECSC) के गठन का प्रस्ताव किया। इसने यूरोपीय कम्पनियों को कीमत युद्ध में उलझने से बचाने का काम किया।

इ.सी.एस.सी. का गठन फ्रांस, फेडरल रिपब्लिक ऑफ जर्मनी, इटली, बेल्जियम, लक्जमबर्ग और नीदरलैंड ने किया था। इसने 1952 से काम करना शुरू किया। इन 6 देशों ने इसके तहत कोयले व स्टील के उत्पादन और व्यापार को नई ऊंचाई तक पहुंचाया। आपसी सहयोग को अन्य क्षेत्रों में विस्तारित करने के लिए इन 6 देशों ने 1957 में नया समझौता कर दो संस्थायें खड़ी कीं यूरोपीय आर्थिक समुदाय (EEC) और यूरोपीयन एनर्जी कम्युनिटी (यूरोएटम)।

यूरोपीय आर्थिक समुदाय के तहत इन 6 देशों ने अपने मंत्रियों की एक काउंसिल का गठन किया जिसने बाद में यूरोपीय संसद का रूप लिया। 1960 के दशक की शुरुआत में इन 6 देशों ने साझी कृषि नीति (कॉमन एग्रीकल्चरल पॉलिसी (CAP) की ओर कदम उठाया। अब इस संस्था को फ्रांसिसी-जर्मन एकाधिकारी पूंजीपति वर्ग अमेरिका से अलग यूरोपीय ताकत के बतौर खड़ा करने की मंशा पालने लगे थे।

1971 से 73 के बीच ब्रेटन वुड्स व्यवस्था ध्वस्त हो गयी। डालर-स्वर्ण अनुपात का अमेरिकी वायदा ध्वस्त होने के साथ यूरोपीय मुद्राओं के विनिमय मूल्य मुक्त रूप से चढ़ने उतरने लगे। इससे यूरोपीय आर्थिक समुदाय (EEC) देशों के बीच व्यापार कठिन होने लगा।

1950 से 1973 तक का काल यूरोपीय देशों के लिए अपेक्षाकृत उच्च विकास दर का काल था। पश्चिमी यूरोप इस दौरान 4.08% की आर्थिक विकास दर से आगे बढ़ा। पर इसके बाद इन देशों की विकास दर थमने लग गयीं। पूंजीपति वर्ग का मुनाफा गिरने लगा। ब्रेटन वुड्स व्यवस्था के ध्वस्त होने के साथ ही यूरोप उस स्थिति में पहुंच चुका था जहां समाजवाद का भय कमजोर हो चुका था इसलिए कल्याणकारी राज्य की अब पहले सरीखी जरूरत नहीं रह गयी थी। पूरी दुनिया की तरह यूरोप के देश भी अब कल्याणकारी राज्य का चोला उतार उदारीकरण, वैश्वीकरण, निजीकरण की राह पर चल दिये। अब राज्य पूंजी की सेवा में नग्न रूप से समर्पित हो गये। पर पूंजीवादी उत्पादन के ठहराव ने पूंजी को अधिकाधिक सट्टेबाजी की ओर उन्मुख किया।

1973 में यूरोपीय आर्थिक समुदाय (EEC) में तीन देशों ब्रिटेन, आयरलैण्ड, डेनमार्क को शामिल कर लिया गया और अब यह अधिकाधिक मुक्त व्यापार की तरफ बढ़ चला। 1979 में इसके देशों ने मुद्रा अवमूल्यन पर नियंत्रण के लिए यूरोपीय मुद्रा तंत्र (यूरोपीयन मॉनिटरी सिस्टम-EMS) का गठन किया। 1980 के दशक में इसके और विस्तार के प्रयास हुए और 1981 में ग्रीस तो 1986 में स्पेन व पुर्तगाल इसमें शामिल हो गये। स्पेन, पुर्तगाल, ग्रीस सरीखे दक्षिण यूरोप के अपेक्षाकृत गरीब देशों के शामिल होने से यूरोपीय आर्थिक समुदाय के भीतर अंतर्विरोध भी नजर आने लगे पर एकीकरण की प्रक्रिया जारी रही अब एकीकृत बाजार की ओर तेजी से कदम बढ़ाते हुए सीमा करों को तेजी से घटाने की बातें होने लगी। 1980 में सिंगल यूरोपीय एक्ट (SEA) के तहत 1992 तक एकीकृत बाजार के निर्माण को पूरा करने का लक्ष्य लिया गया। यूरोपीय आर्थिक समुदाय (EEC) को यूरोपीय आयोग (यूरोपीयन कमिशन-EC) में तब्दील कर दिया गया। यूरोपीय संसद को कुछ बजट प्रावधान मिल गये। और अब एक साझी मुद्रा की भी बातें होने लगीं।

1989 में जर्मनी के एकीकरण के बाद जर्मनी की यूरोपीय आयोग में ताकत अपेक्षाकृत बढ़ गयी। 1991 में जर्मन व फ्रांसीसी पूंजीपति वर्ग मासट्रिक्ट (Mastricht Treaty) समझौते की ओर आगे बढ़े। जिसके तहत ब्रिटेन को छोड़ सभी सदस्य देश एक मुद्रा व 1999 में यूरोपीय केन्द्रीय बैंक की स्थापना के लिए सहमत हो गये। अब यूरोपीय आयोग (EC) को यूरोपीय संघ (EU) में तब्दील कर दिया गया। इस समझौते के तहत वे ही देश आर्थिक व मौद्रिक संघ [इकॉनॉमिक एण्ड मॉनिटरिंग यूनियन (EMU)] के सदस्य बन सकते थे जिनकी मुद्रा स्फीति दर तीन सबसे निचले सदस्यों की दर के औसत से 1.5% से अधिक न हो, जिनका वार्षिक बजट घाटा सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के 3% से कम हो, जिनका कुल सरकारी कर्ज सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के 60% से कम हो। साथ ही वे देश कम से कम दो वर्षों तक यूरोपीय मॉनिटरी सिस्टम द्वारा तय विनिमय दर बैण्ड (±2.25%) में हों। उस समय केवल फ्रांस व लग्जमबर्ग ही इन शर्तों का पालन कर रहे थे। 1995 में ऑस्ट्रिया, फिनलैण्ड और स्वीडन भी यूरोपीय संघ के सदस्य बन गये। जनवरी 1999 में 15 में से 11 देशों ने साझी मुद्रा यूरो अपना ली और जनवरी 2002 तक उन्होंने केवल यूरो में काम करना शुरू कर दिया। पर अभी भी ब्रिटेन, डेनमार्क, स्वीडन व ग्रीस यूरो क्षेत्र से बाहर थे। ग्रीस 1997 तक भी तमाम प्रयासों के बावजूद तय मानदंड तक नहीं पहुंच पाया था। फिर भी 2001 में ग्रीस को यूरो क्षेत्र में शामिल करने का निर्णय ले लिया गया।

इसके बाद से अब तक यूरोपीय संघ में 28 देश व यूरो क्षेत्र में 19 देश शामिल हो चुके हैं।

यूरोपीय संघ और यूरो क्षेत्र की इस पूरी कवायद का अर्थ था कि यूरोप के साम्राज्यवादियों के हित में देशों की राष्ट्रीय सीमाओं को क्रमशः समाप्त कर दिया जाना। साम्राज्यवादी पूंजी के प्रवाह को इसके जरिये मुक्त किया जाना था। साथ ही इसके जरिये फ्रांसिसी व जर्मन साम्राज्यवादियों द्वारा यूरोप के पिछड़े व कमजोर देशों के बाजार पर कब्जा किया जाना था। यूरोपीय साम्राज्यवादी इसका इस्तेमाल कर अमेरिकी व अन्य साम्राज्यवादियों के साथ बेहतर सौदेबाजी की स्थिति हासिल करना चाहते थे। यह साम्राज्यवादी पूंजी के हित में एकीकरण था।

यूरोपीय संघ और यूरो क्षेत्र के सभी देश एक जैसे नहीं थे इसलिए उनकी अर्थव्यवस्थाओं के संचालन के लिए जैसे ही एक समान नीति (यूरो क्षेत्र के लिए समान ब्याज दर, एक समान मुद्रास्फीति, समान वित्तीय नीति) बनायी गयी तो इसने देर सबेर समस्या पैदा करनी थी। परन्तु साम्राज्यवादी वित्त पूंजी की मांग के लिए इस एकीकरण को अंजाम दिया गया।

यूरो क्षेत्र में शामिल होने वाले आयरलैण्ड के साथ दक्षिणी यूरोप के देश स्पेन, पुर्तगाल, इटली, ग्रीस यूरोप के अधिक विकसित देशों की तुलना में हर मामले में पिछड़े थे। ग्रीस तो शामिल होने के वक्त ही संकट ग्रस्त था। ऐसी परिस्थिति में 2008 के वैश्विक आर्थिक संकट ने यूरो क्षेत्र के भीतर पनप रहे अंतरविरोधों को एक झटके से सतह पर ला दिया।

यूरो क्षेत्र का मौजूदा संकट वास्तव में उत्पादन के उस संकट का ही परिणाम है जो मूलतः 70 के दशक से ही जारी था। 70 के दशक में यूरोप की वास्तविक विकास दर 3.4% थी जो 80 के दशक में घटकर 2.4%, 90 के दशक में 2.2% व 2001-2010 के दशक में यूरोजोन के लिए 1.1 % रह गयी।

यूरो क्षेत्र के देशों के भीतर इस एकीकरण के चलते असमानता घटने के बजाय बढ़ती चली गयी। दक्षिणी यूरोप के देश जिनकी उत्पादक शक्तियां पिछड़ी थीं व जिनकी अर्थव्यवस्था में मध्यम व लघु उद्योगों की छोटी पूंजी का बड़ा हिस्सा था, क्रमशः पिछड़ने लगे। 80 के दशक में इन क्षेत्रों को यूरो क्षेत्र के कृषि जोन में तब्दील कर दिया गया। ये जर्मन-फ्रांस के उद्योगों के कच्चे माल या मध्यवर्ती माल के आपूर्तिकर्ता में तब्दील हो गये। परन्तु 90 के दशक की शुरुआत में पूर्वी यूरोप, उत्तरी अफ्रीका, तुर्की, वियतनाम, चीन के कच्चे मालों व मध्यवर्ती मालों की उपलब्धता ने इन देशों के लघु व मध्यम उद्योगों के लिए संकट खड़ा कर दिया और वे क्रमशः बन्द होने लगे और इन देशों की अर्थव्यवस्था में गंभीर संकट का शिकार होने लगीं।

परन्तु उत्पादन के क्षेत्र से कहीं बड़ा संकट वित्तीय क्षेत्र में इन देशों को तबाह करने के लिए खड़ा था। जब आर्थिक व मौद्रिक संघ (EMU) सबसे पहले प्रस्तावित किया गया तो यूरोपीय केन्द्रीय बैंक के तहत सभी सदस्य देशों के लिए समान ब्याज दर का प्रावधान तय किया था। जिसका अर्थ था कि निचली मुद्रास्फीति दर वाले देशों के लिए ब्याज दर ऊंची होनी थी और ऊंची मुद्रास्फीति दर वाले देशों के लिए ब्याज दर नीची होती थी। इसका परिणाम यह हुआ कि निम्न मुद्रास्फीति वाले केन्द्रीय (समृद्ध देश) देशों में सरकारी कर्ज व मजदूरी दर स्थिर बनी रही जबकि ऊंची मुद्रा स्फीति वाले परिधि के गरीब देशों में यह बढ़ती चली गयी। यूरोपीय केन्द्रीय बैंक द्वारा वित्तीय

नियंत्रण समाप्त कर देने के चलते परिधिगत देशों को केन्द्रीय देशों से सरकारी व निजी ऋण आसानी से सुलभ होता चला गया। इस तरह केन्द्र से परिधि की ओर वित्त के प्रवाह ने परिधिगत के देशों के सकल घरेलू उत्पाद को बढ़ने में तेजी से मदद की। 1995-2008 के दौरान ग्रीस का सकल घरेलू उत्पाद 51%, स्पेन का 56%, आयरलैण्ड का सकल घरेलू उत्पाद 124% बढ़ गया जबकि इस दौरान जर्मनी के लिए यह वृद्धि 19.5%, इटली के लिए 17.8% व फ्रांस के लिए 30.8% रही। इसी तरह मजदूरी परिधि देशों में 25% से 27% तक उत्पादकता में बगैर किसी खास विकास के बढ़ गयी जबकि जर्मनी में मजदूरी दर पूरे दशक में स्थिर बनी रही।

केन्द्र से परिधि की ओर वित्तीय पूंजी के स्थानांतरण ने क्रमशः परिधि के देशों की वित्तीय संस्थाओं को केन्द्र की वित्तीय संस्थाओं पर निर्भर बना दिया। परिधि के देशों के बैंकों, बीमा संस्थानों आदि पर केन्द्र के देशों का नियंत्रण हो गया। परिधि के देशों के सरकारी बॉण्डों के क्रेता केन्द्र के देशों के वित्तीय संस्थान थे। यूरोपीय केन्द्रीय बैंक ने इस सब को नियंत्रित करने का एक भी प्रयास नहीं किया।

2007 में जैसे ही संकट की शुरुआत हुई और वह यूरोप तक पहुंचा तो बाकी देशों की तरह परिधि के देशों की सरकारों ने भी अपने खजाने अपने डूबते वित्तीय संस्थानों को बचाने के लिए खोल दिये। इसका सीधा परिणाम इन देशों के सरकारी कर्ज में बढ़ोत्तरी के रूप में व बढ़ते बजट घाटे के रूप में सामने आना था। कम या ज्यादा सभी देश इसी ओर बढ़े परंतु दक्षिणी यूरोप के देशों में संकट अधिक घनीभूत हो गया क्योंकि एक सीमा के बाद ये देश अपने विकास मॉडल को सुचारु ढंग से चलाने में असफल होने लगे। संकट के काल में इन देशों के वित्तीय संस्थानों में लगी पूंजी के छू मंतर होने के साथ रेटिंग एजेंसियों द्वारा इनकी रेटिंग गिराने से मिलने वाले ऋण पर ऊंची ब्याज दर ने इनकी सरकारों के सामने समस्या को गहरे रूप में ला खड़ा किया।

परिणाम यह हुआ कि 2007 में आयरलैण्ड का कर्ज सकल घरेलू उत्पाद का 25.1% स्पेन का 36.3%, पुर्तगाल का 68.4%, था केवल ग्रीस का ही 107.4% के ऊंचे स्तर पर था। यह कर्ज 2011 आते-आते आयरलैण्ड के लिए 106.4%, ग्रीस के लिए 170.3%, पुर्तगाल के लिए 108.3% और स्पेन के लिए 69.3% तक जा पहुंचा।

कर्ज की बढ़ती से नये कर्जों की उपलब्धता कम होने लगी और इन देशों को विशेष बेल आउट पैकेज के लिए कर्जदाता संस्थाओं की शरण में जाने को मजबूर होना पड़ा। इन देशों को दिये जा रहे बेल आउट पैकेज की रकम से दरअसल इन देशों के बैंकों और वित्तीय संस्थानों में लगी फ्रांसिसी-जर्मन बैंकों व वित्तीय संस्थानों की पूंजी की अदायगी की जा रही है। यानी बेल आउट पैकेज का इस्तेमाल उत्पादन में किसी बढ़ोत्तरी के लिए निवेश में नहीं किया जा रहा है। इसका इस्तेमाल इन देशों को फ्रांसिसी-जर्मन वित्तीय संस्थानों के बजाय कर्जदाता संस्थाओं का कर्जदार बनाने में किया जा रहा है।

इस तरह यूरो क्षेत्र के संकट का कारण दक्षिण यूरोप के इन देशों के कर्जों में वृद्धि नहीं है बल्कि यह यूरो क्षेत्र के आर्थिक-राजनीतिक ढांचे के अंतर्विरोधों के वैश्विक आर्थिक संकट के वक्त खुलकर सामने आने का परिणाम है। इन अर्थों में इन दक्षिणी यूरोप के देशों के संकट के लिए यूरो क्षेत्र का सदस्य होना भी जिम्मेदार रहा है। ग्रीस के मामले में भी इसकी एक भूमिका है।

C. ग्रीस संकट : विकासक्रम

बाकी यूरोप के देशों की तरह 1960 का दशक ग्रीस के पूंजीवाद के लिए तीव्र विकास का दशक था। 60 के दशक में ग्रीस की आर्थिक वृद्धि दर 8.5% वार्षिक रही। इस दशक में मैन्युफैक्चरिंग का तीव्र गति से विकास हुआ। इस दौरान ग्रीस के पूंजीपति वर्ग को मजदूर वर्ग पर चौतरफा दबाव कायम करने का अधिकार प्राप्त था और वह सापेक्ष बेशी मूल्य (वेतन बढ़ाकर, उत्पादकता व श्रम की तीव्रता बढ़ाकर) के साथ निरपेक्ष बेशी मूल्य (काम के घंटे बढ़ाकर) भी हासिल कर रहा था। सैनिक तानाशाही के शासन काल में मजदूर आंदोलनों व वामपंथी ताकतों दोनों को बुरी तरह कुचला गया।

1961-73 के इस काल में ग्रीस का सरकारी बजट अपेक्षाकृत छोटा था और करों से प्राप्त राशि से वह पूरा हो जाता था। 70 के दशक की शुरुआत में ग्रीस की अर्थव्यवस्था जहाज उद्योग, उद्योगों में देशी विदेशी निवेश व कृषि के आधुनिकीकरण के जरिये तेजी से विकास कर रही थी। शहरीकरण बढ़ने से शहर आर्थिक विकास के केन्द्र के बतौर उभर रहे थे और आधारभूत ढांचे में निवेश बढ़ रहा था।

ग्राफ -4

ग्रीस : सकल घरेलू उत्पाद (जी.डी.पी.) की वृद्धि दर

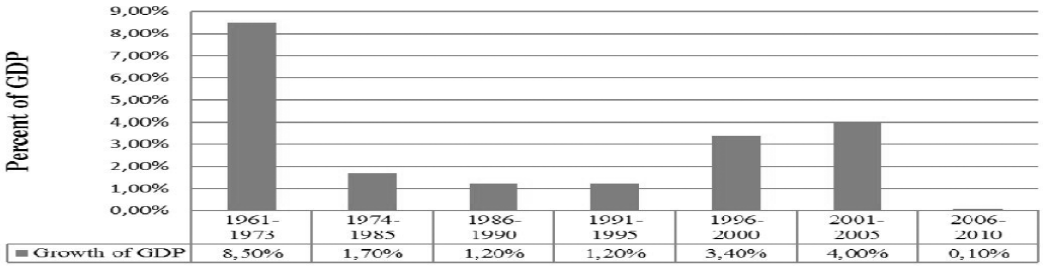

स्रोत : The Crisis of Greek Capitalism by Spyros Bakas, page 21

70 के दशक में ग्रीस के निर्यात में वृद्धि व मजदूरी में वृद्धि के चलते घरेलू मांग बढ़ रही थी इसके बावजूद संकट की शुरुआत सैनिक तानाशाही के खात्मे के साथ ही 1974 से दिखाई देने लगी। 1974 से आर्थिक विकास दर थमने लगी (देखें ग्राफ-4) 1974-78 के दौरान सैनिक तानाशाही की समाप्ति के बाद ग्रीस का मजदूर वर्ग संगठित होने लगा और इसके साथ ही उसके ट्रेड यूनियन सघर्षों में भी वृद्धि हुई। मजदूर वर्ग की इस बढ़ती में तथाकथित समाजवादी पार्टी पासोक की सरकार की भी भूमिका रही। परन्तु वास्तव में यह सरकार भी पूंजीपति वर्ग के हितों को ही सम्बोधित कर रही थी। पूंजीपति वर्ग के मुनाफे को बनाये रखने के लिए इस सरकार ने ऐसी कर व्यवस्था खड़ी की जिसमें अप्रत्यक्ष कर का वर्चस्व था। अप्रत्यक्ष कर समूचे कर का दो तिहाई था। इस तरह पूंजीपति वर्ग पर बेहद मामूली कर आरोपित किया गया। इसी तरह किसानों को कर से मुक्त रखा गया। साथ ही उद्योग को राज्य द्वारा संरक्षण के नाम पर तरह-तरह की सब्सिडी व कर छूट दी गयी। लघु व मध्यम उद्योगों को भी बेहद कम कर की इस संरचना में फलने फूलने का मौका दिया गया।

1980 के दशक से बेरोजगारी दर में वृद्धि तेज होती गयी। 1980-82 की अंतर्राष्ट्रीय मंदी ने ग्रीस के निर्यात को गिराने का काम किया और ग्रीस के पूंजीवाद के तेज विकास का दौर पूरी तरह समाप्त हो गया। ग्रीस की विकास दर 1960 के दशक के 8.5% से गिरकर 1986 -90 में 1.2% रह गयी।

1981 में ग्रीस ने यूरोपीय आर्थिक समुदाय (EEC) की सदस्यता ली। पासोक की जगह सत्तासीन हुई न्यू डेमोक्रेसी ने इसमें पहलकदमीं ली। यूरोपीय आर्थिक समुदाय का सदस्य बनने से ग्रीस के पूंजीपतियों को वित्त के अपेक्षाकृत आसान स्रोत मुहैय्या हो गये। 1981 में पुनः सत्तासीन हुई पासोक ने इसी वक्त ग्रीस की घरेलू मांग में वृद्धि के लिए व मजदूर संघर्षों के दबाव में श्रम कानूनों का एक ढांचा खड़ा कर व वेतन बढ़ोत्तरी कर ग्रीस के कल्याणकारी राज्य को कायम किया। यह वह दौर था जब यूरोप के अन्य देश आस्टरिटी कार्यक्रम लागू कर रहे थे परन्तु ग्रीस का शासक वर्ग कल्याणकारी राज्य को मजबूत करने को बाध्य हो रहा था।

80 के समूचे दशक में ग्रीस की मुद्रा ड्रैकमा (Drachma) का बार-बार अवमूल्यन होता रहा। इस काल में पर्यटन उद्योग व कृषि में यूरोपीय सब्सिडी के चलते विकास हुआ। इस पूरे काल में सरकारी खर्च बढ़ता रहा और उसका बड़ा हिस्सा ग्रीस के पूंजीपतियों को लघु व मध्यम उद्योगों को सब्सिडी के रूप में हस्तांतरित किया जाता रहा। सरकारी बजट 1961-73 के सकल घरेलू उत्पाद के 20.9% से बढ़कर 80 के दशक के अंत में 40% तक जा पहुंचा। परन्तु इसी दौर में सरकार को प्राप्त टैक्स में इस अनुरूप वृद्धि नहीं हुई जिसने सरकार के बजट घाटे व अंततः सरकार पर कर्ज की वृद्धि की राह दिखाई। (देखें ग्राफ 5)

परन्तु कल्याणकारी राज्य का यह ढांचा बहुत शीघ्र ही ग्रीस के पूंजीपति वर्ग को त्यागना पड़ा। 1985 से ही पासोक ने अपना पूंजी परस्त चेहरा प्रदर्शित करते हुए मजदूर वर्ग पर हमला तेज करना शुरू कर दिया। कटौती कार्यक्रम लागू किया जाने लगा। इस कटौती कार्यक्रम का 1986-88 के दौरान हड़तालों की लम्बी शृंखला के जरिये मजदूर वर्ग ने तीव्र विरोध किया। 90 के दशक में आर्थिक विकास कुछ संभला पर यह 61-73 के काल की दर से खासा नीचे बना रहा। उत्पादन प्रक्रिया में उन्नत तकनीक के अभाव में औद्योगिक क्षेत्र में विकास के बजाय विऔद्योगीकरण की प्रक्रिया शुरू होने लगी।

90 के दशक में पासोक सरकार ने ग्रीस को आर्थिक व मौद्रिक संघ (EMU) में शामिल कराने के उद्देश्य से मास्ट्रिक्ट समझौते की शर्तों को हासिल करने का प्रयास करना शुरू किया। इसके लिए उपभोग पर अप्रत्यक्ष कर को बढ़ाने, ब्याज दर बढ़ाने के साथ मुद्रा के अवमूल्यन का सहारा लिया गया। 1997 के अंत से इसी उद्देश्य से सरकारी ऋण को घटाने के लिए निजीकरण का सहारा लिया गया। 1999 में ग्रीस ने आधिकारिक तौर पर घोषित कर दिया कि उसका बजट घाटा 3% से नीचे है हालांकि सरकारी कर्ज अभी भी सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के 100% पर बना हुआ था। तब यूरोपीय काउंसिल ने ग्रीस को शर्त पूरा न करने के बावजूद यूरो क्षेत्र में शामिल होने की अनुमति दे दी।

ग्राफ-5

ग्रीस : सार्वजनिक खर्च और चालू राजस्व की तुलना

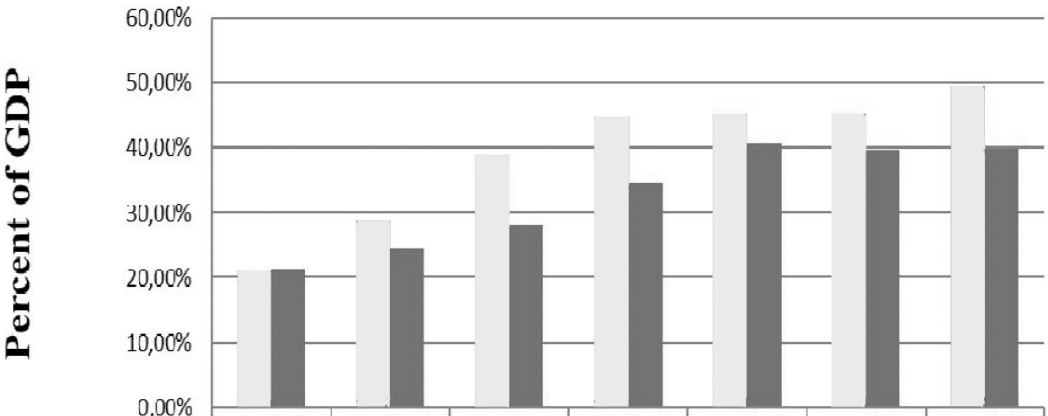

	1961-1973	1974-1985	1986-1990	1991-1995	1996-2000	2001-2005	2006-2010
Public Expenditures	20,90%	28,90%	39,10%	44,90%	45,30%	45,10%	49,60%
Current Revenues	21,30%	24,40%	28,30%	34,80%	40,60%	39,70%	39,90%

परन्तु 2004 में यह तथ्य सामने आया कि ग्रीस का बजट घाटा 1997 में 4% की जगह 6.6%, 1998 में 2.5 जगह 4.3 और 1999 में 1.8 की जगह 3.4% था। ग्रीस का पूंजीपति येनकेन प्रकारेण यूरो क्षेत्र में शामिल होने को लालायित था और इसके लिए आंकड़ों की हेरा फेरी से भी उसे गुरेज नहीं था। 2010 में पुनः आकलन में स्थिति कहीं ज्यादा गंभीर पायी गयी। 2010 में ही यह तथ्य सामने आया कि तमाम वित्तीय संस्थाओं-बैंकों की कारगुजारियों की मदद से ग्रीस सरकार अपने उधार व बजट घाटे को कम प्रदर्शित करने में सफल हुई थी। जिसका एक जरिया ग्रीस द्वारा तमाम ऐसे उधार लेना था जिनका भविष्य में भुगतान किया जाना था और जिन्हें किसी रिकार्ड में प्रदर्शित नहीं किया जाना था। इसी के साथ 'छाया' अर्थव्यवस्था (शैडो इकॉनॉमी) की बढ़ती ने भी वास्तविक आंकड़ों तक पहुंच को मुश्किल बनाया।

इस संकट में सट्टेबाज वित्तीय पूंजी ने भी अपने खासे जौहर दिखलाये। सरकारी बाँडों के वास्तविक मूल्य, उन पर ब्याज दर को गिराने चढ़ाने से लेकर सरकारों की क्रेडिट रेटिंग व उनके दिवालिया होने तक पर भारी पैमाने पर सट्टा लगाया गया। जिसका नतीजा ग्रीस से एक झटके में वित्तीय पूंजी के उड़न छू होने व ग्रीस के कर्ज संकट के गर्त में जा गिरने के रूप में सामने आया। रातों रात ग्रीस के सरकारी बाँड धूल चाटने लगे और ग्रीस को नये कर्ज भारी ब्याज दर पर ही मुहैय्या होना मुमकिन होने लगा।

70 के दशक में वृद्धि कर रही मैन्युफैक्चरिंग 80 व 90 के दशक में लगातार घटती चली गयी। 1990 से 2005 के बीच उद्योगों (खनन, उपभोक्ता, मध्यवर्ती व निवेश के समान बनाने वाले उद्यम) से 1.32 लाख रोजगार समाप्त हो गये। परंतु इसी समय सरकारी क्षेत्र लगातार बढ़ता गया। 1980 के दशक से शुरू हुआ उत्पादन क्षेत्र का संकट दरअसल कभी बाद के काल में कम नहीं हुआ। इसके बावजूद 90 व 2005 के दौरान ग्रीस अर्थव्यवस्था विकासमान रही तो इसके पीछे गैर उत्पादक गतिविधियों खासकर वित्त क्षेत्र की प्रमुख भूमिका रही।

ग्रीस के उत्पाद अधिकाधिक अन्य देशों की तुलना में महंगे होते चले गये। जिसके चलते ग्रीस का निर्यात लगातार सिकुड़ता चला गया। इसके बावजूद सरकारी खर्च में वृद्धि, घरेलू बाजार को अतिशय निचोड़ कर ग्रीस का पूंजीपति वर्ग अपना मुनाफा बरकरार रखने में सफल हुआ। 1995 -2008 के दौरान घरेलू उपभोक्ताओं पर निजी कर्ज 13% से बढ़कर 61% हो गया। इस तरह 2001-2005 के दौरान हासिल की गयी विकास दर उत्पादन में बढ़ते निवेश या निर्यात में वृद्धि की बदौलत नहीं बल्कि घरेलू मांग से हासिल की गयी।

2007 में आर्थिक संकट का सामना होने के वक्त ग्रीस की अर्थव्यवस्था पहले से ही संकटग्रस्त थी। उसका सरकारी कर्ज सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के 100% के पार था। संकट के वक्त में अपने डूबते वित्तीय संस्थानों-पूंजीपति वर्ग को बचाने के लिए ग्रीस की सरकार ने अपने खर्च में खासा बढ़ोत्तरी कर दी। परिणाम यह हुआ कि ग्रीस का बजट घाटा व सरकारी खर्च दोनों आसमान छूने लगे। ऐसे में 2009 का अंत आते आते ग्रीस की सरकार के दिवालिया होने के खतरे व बुरी तरह कर्जजाल में फंसने का तथ्य सामने आया। इस सबसे बचाने के लिए सामने आयी अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष, यूरोपीय संघ व यूरोपीय केन्द्रीय बैंक की तिकड़ी ने बेल आउट पैकेज के बदले ग्रीस की सरकार पर बड़े पैमाने पर कटौती कार्यक्रम लागू करने, वैट समेत अन्य टैक्स बढ़ाने व निजीकरण के लिए दबाव बनाया। ग्रीस 2010, 2012, 2015 में तीन बेल आउट पैकेज प्राप्त कर चुका है। परन्तु उसकी अर्थव्यवस्था सुधरने के बजाय लगातार सिकुड़ती जा रही है। बजट घाटे को तो कम कर लिया गया है पर सरकारी कर्ज की मात्रा हाल फिलहाल सिकुड़ती अर्थव्यवस्था के साथ कम होने का नाम नहीं ले रही है। आस्टरिटी कार्यक्रम अर्थव्यवस्था में घरेलू मांग को गिराकर और सिकुड़ने में ही मदद कर रहे हैं।

दरअसल ग्रीस को दिये जा रहे बेल आउट पैकेज का प्रमुख उद्देश्य ग्रीस की अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाना है ही नहीं। इतने भारी पैमाने पर कटौती कार्यक्रम लागू कर ग्रीस की अर्थव्यवस्था को कोई चमत्कार ही आसानी से पटरी पर ला सकता है।

फिलहाल ग्रीस को दिये जा रहे बेल आउट पैकेज का प्राथमिक लक्ष्य ग्रीस को यूरो क्षेत्र में बनाये रखते हुए ग्रीस में निवेशित जर्मन-फ्रांसीसी बैंकों, वित्तीय संस्थानों की पूंजी को डूबने से बचाना था। बेल आउट पैकेज के जरिये प्राप्त राशि इन संस्थानों को प्राप्त हो

गयी और उनके बजाय ग्रीस अब अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष, यूरोपीय संघ व यूरोपीय केन्द्रीय बैंक की तिकड़ी का प्रमुख रूप के कर्जदार बन गया।

बैंक ऑफ इण्टरनेशनल सेटेलमेंट (BIS) के अनुसार 2012 की तीसरी तिमाही में यूरोपीय बैंकों का ग्रीस के कुल (निजी व सरकारी) कर्ज में हिस्सा 79 अरब यूरो था जो मुख्यतया जर्मनी (25.2 अरब यूरो) व फ्रांस (31.7 अरब यूरो) द्वारा दिया गया था।

79 अरब यूरो की राशि जर्मनी व फ्रांस के बैंकों के लिए बड़ी रकम नहीं थी पर इसका डूबना तब बड़ा खतरा बन जाता जब यूरोपीय बैंकों की स्पेन में लगी 448 अरब यूरो की राशि, इटली में लगी 622 अरब यूरो की राशि, पुर्तगाल में लगी 143 अरब यूरो की राशि के डूबने की प्रक्रिया का शुरुआत बिंदु बन जाता। इस तरह ग्रीस का संकटग्रस्त होना और यूरो क्षेत्र से बाहर जाना पूरे यूरोपीय बैंकिंग तंत्र के लिए खतरे की घण्टी का कारण बन सकता था। इसीलिए बेल आउट पैकेज के जरिये उसे यूरो क्षेत्र में बचाने के फिलहाल प्रयास चल रहे हैं। पर आगे भविष्य में ग्रीस की बलि चढ़ा कर शेष यूरो क्षेत्र को बचाने की नीति भी यूरोपीय साम्राज्यवादी अख्तियार कर सकते हैं।

इस तरह ग्रीस का मौजूदा संकट सर्वप्रथम पूंजीवादी उत्पादन वितरण के आम संकट और खास तौर पर पिछले दो-तीन दशकों की उदारीकरण-वैश्वीकरण की आम नीति का परिणाम है। यूरोपीय संघ व यूरो क्षेत्र का निर्माण इन्हीं नीतियों के दौर में यूरोपीय साम्राज्यवादियों के हित में किया गया था जिसने 80 के दशक की शुरुआत से संकट ग्रस्त ग्रीस की अर्थव्यवस्था को तात्कालिक तौर पर तो वित्त की सुलभता से तत्काल संकट में डूब जाने से बचाया पर अपनी बारी में मौजूदा कहीं बड़े संकट की राह भी दिखलायी।

ग्रीस के आर्थिक संकट के गहराते जाने ने ग्रीस में जहां एक ओर राजनीतिक संकट को जन्म दिया है वहीं जनता के कटौती कार्यक्रमों के खिलाफ जुझारु संघर्षों को भी इसने पैदा किया है।

D. कटौती कार्यक्रम और जन संघर्ष

ग्रीस के मौजूदा संकट में पहले से ही ग्रीस के शासक वर्ग ने ग्रीस की जनता पर हमला बोल रखा था परन्तु 2010 से जारी बेल आउट पैकेज की शर्तों के रूप में लागू कटौती कार्यक्रमों ने ग्रीस की जनता की कमर ही तोड़ दी। इन कटौती कार्यक्रमों के चलते ग्रीस किन परिस्थितियों का शिकार है उन्हें संक्षेप में इन बिन्दुओं के जरिये समझा जा सकता है।

(1) ग्रीस में बेरोजगारी की दर 2008 के 6.6% के स्तर से बढ़कर 2013 में 27.6% तक जा पहुंची है। युवा बेरोजगारी दर 50% से अधिक है।

(2) न्यूनतम मजदूरी में 22% की कटौती की जा चुकी है।

(3) सरकारी क्षेत्र के रोजगारों की संख्या जुलाई 2010 के 7.68 लाख से घटाकर 2013 में 6.86 लाख कर दी गयी है। सर्वाधिक रोजगारों की कटौती शिक्षा व स्वास्थ्य के क्षेत्र में हुई है जहां 25.5% नौकरियां समाप्त कर दी गयी हैं। निजी क्षेत्र में 2008 से 2012 के दौरान निर्माण में 1.88 लाख, मैन्युफैक्चरिंग में 1.88 लाख व होलसेल या रिटेल ट्रेड एण्ड रिपेयर ऑफ मोटर वेहिकिल में 1.53 लाख रोजगार समाप्त हो चुके हैं।

(4) समाज में असमानता के स्तर को प्रदर्शित करने वाला गिनी सूचकांक 2010 के 0.347 से बढ़कर 2012 में 0.368 हो गया। इसी तरह सबसे धनी 20% लोगों की आय व सबसे निर्धन 20% लोगों की आय में अनुपात 2009 में 6.067 से बढ़कर 2012 में 7.544 हो गया। यह ग्रीस के समाज में बढ़ती असमानता को प्रदर्शित करता है।

(5) ग्रीस की 9.8 प्रतिशत आबादी गम्भीर रूप से गरीबी का शिकार है जो बुनियादी सुविधायें भी हासिल नहीं कर पा रही है। इसी तरह 20 हजार की जनसंख्या बेघर है।

(6) ग्रीस में स्वास्थ्य सेवाओं का खर्च वहन न कर पाने वाली आबादी की तादाद 2009 के 4.1% से बढ़कर 2012 में 6.3% हो गयी है।

(7) कल्याणकारी मदों में भारी कटौती करते हुए बेरोजगारी भत्ते को हासिल करना अधिकाधिक कठिन बना दिया गया और इसकी अवधि व दी जाने वाली राशि दोनों को घटा दिया गया। आवास के लिए दी जाने वाली सब्सिडी खत्म कर दी गयी। पेंशन सुधारों के तहत वर्ष में दी जाने वाली दो माह की अतिरिक्त पेंशन समाप्त कर दी गयी। पेंशन की राशि में कई बार कटौती की गयी। इसी तरह स्वास्थ्य सेवाओं को बाजार के हवाले करने के कदमों की शुरुआत कर दी गयी।

(8) सामाजिक सुरक्षा की मद में कुल खर्च 2009 के सकल घरेलू उत्पाद (जी.डी.पी.) के 27.2% से घटाकर 2013 में 20.9% तक ले आया गया।

(9) मजदूर वर्ग के ऊपर इस दौरान बड़े पैमाने पर हमला बोला गया। उनके स्थायी होने के अधिकार, सामूहिक सौदेबाजी, निष्कासन से सुरक्षा आदि को क्रमशः कमजोर कर दिया गया है। अस्थाई काम व ओवर टाइम को बढ़ावा दिया गया है। मजदूरों को प्राप्त कानूनी सहूलियतों को कमजोर कर दिया गया है।

कटौती कार्यक्रमों की उपरोक्त सूची का परिणाम बड़े पैमाने पर जन असंतोष के रूप में सामने आना था और वह आया।

जन असंतोष की शुरुआत 2007-08 में शिक्षा में नवउदारवादी सुधारों के खिलाफ छात्रों के संघर्ष से हुई। इसके पश्चात 2008 की दिसम्बर में पुलिस द्वारा एक युवक की हत्या के खिलाफ 'दिसम्बर विद्रोह' के नाम से मशहूर जन संघर्ष पैदा हुआ।

कटौती कार्यक्रमों के खिलाफ संघर्ष 2011 के स्क्वायर आंदोलन के रूप में सामने आया जिसे सच्चे लोकतंत्र के लिए संघर्ष का भी नाम दिया गया। इसके अलावा ग्रीस के मजदूर वर्ग ने दर्जनों बार कटौती कार्यक्रमों के खिलाफ आम हड़ताल का भी आह्वान किया जिसमें लाखों मजदूरों-छात्रों-नागरिकों ने भागीदारी की।

जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि ग्रीस में लघु व मध्यम उद्यमों की बड़े पैमाने पर मौजूदगी के साथ लगभग एक तिहाई आबादी स्वरोजगार में है। छोटी पूंजी और उसके मालिक पेटी बुर्जुआ का बड़े पैमाने पर अस्तित्व मौजूद है।

ग्रीस में 80 के दशक के उत्तरार्द्ध से जब उदारीकरण निजीकरण की नीतियों को लागू करने के प्रयास हुए तो मजदूर वर्ग पर हमले के साथ छोटी पूंजी के मालिकों की सम्पत्ति का भी हरण शुरू होने लगा। खासकर 90 के दशक में जब मध्यवर्ती व कच्चे मालों की प्राप्ति के अपेक्षाकृत सस्ते स्रोत तीसरी दुनिया के देशों के रूप में सामने आने लगे तो ग्रीस के छोटे उद्यम तबाह होने लगे। छोटी पूंजी के मालिकों का संपत्ति हरण होने लगा।

आर्थिक संकट के काल में जब कटौती कार्यक्रम तेजी से जनता पर थोपा गया तो यह सरकारी नौकरियों, निजी क्षेत्र के रोजगारों के छीनने, पेंशन, बेकारी भत्ते के छीनने के साथ साथ स्वरोजगार के अवसरों के सिकुड़ने के रूप में भी सामने आया। घरेलू मांग के गिरने से इन स्वरोजगारों के उत्पादित उपभोक्ता मालों का बाजार चौपट होता चला गया।

ऐसे में जब 2011 में स्क्वायर आंदोलन शुरू हुआ तो कटौती कार्यक्रम का विरोध मजदूर ही नहीं छोटी पूंजी के मालिक, स्वरोजगार वाले लोग, व युवा सभी कर रहे थे।

ग्रीस की आबादी और संघर्षों में मध्यम, निम्न मध्यम वर्ग की बड़े पैमाने पर मौजूदगी से ये संघर्ष मजदूर वर्ग के ट्रेड यूनियन संघर्ष की तरह अनुशासित नहीं हो सकते थे।

2008 के दिसम्बर विद्रोह में छात्रों के साथ एनजीओ, अराजकतावादी सिरिजा सभी सक्रिय थे तो 2011 के स्क्वायर संघर्ष में भी भांति भांति के संगठन भागीदार थे।

ग्रीस की आबादी में पेटी बुर्जुआ तत्वों की इस पहलकदमी को ही आधार बना फासीवादी गोल्डेन डॉन से लेकर कल्याणकारी राज्य की चाहत रखने वाले तमाम नामधारी वामपंथी संगठन फल फूल रहे हैं।

ग्रीस में पिछले 6-7 वर्षों से जारी संघर्षों का यह सिलसिला थमा नहीं है और संघर्षों के ऊपर सवार होकर सत्ता पर पहुंची पार्टी सिरिजा ने भी कटौती कार्यक्रम की नयी शृंखला की घोषणा की तो जनता ने उसका स्वागत भी आम हड़ताल व कटौती कार्यक्रम विरोधी प्रदर्शनों से किया।

यह कटौती कार्यक्रमों व संकट से नाराज ग्रीस के मेहनतकशों-बेरोजगारों का आक्रोश ही है कि 1974 के बाद सबसे अधिक सत्ता में रही पार्टी पासोक का जनाधार खासा सिकुड़ चुका है और एक नई पार्टी के रूप में सिरिजा उसकी जगह लेती दिखलाई पड़ रही है। पर जनविरोधी कदमों को अंजाम देने वाली वाम चेहरा लिए इस पार्टी को भी ग्रीस की जनता कब तक बर्दाश्त करेगी यह अभी भविष्य के गर्त में है।

कुल मिलाकर ग्रीस की जनता ने अपना असंतोष सड़कों के साथ चुनावों में प्रदर्शित करना जारी रखा है।

E. राजनीतिक संकट और सिरिजा का उभार

ग्रीस के आर्थिक संकट ने पिछले 5 वर्षों से एक तरह के राजनीतिक संकट को उत्पन्न कर दिया है राजनीतिक संकट का अंदाजा 2009 से 2015 तक पांच बार ग्रीस की संसद के लिए हुए चुनावों से लगाया जा सकता है। 2007 से जोड़ा जाय तो 2007 से 2015 तक ग्रीस 7 आम चुनावों से गुजर चुका है।

ग्रीस में परम्परागत रूप से 1974 में लोकतंत्र की स्थापना (1967-74 के सैनिक शासन के बाद) के बाद तथाकथित समाजवादी पार्टी पासोक व न्यू डेमोक्रेसी का शासन रहा है। इनमें भी पासोक (पैन हैलेनिक सोशलिस्ट मूवमेंट) का अधिकतर समय शासन रहा। 2009 की अक्टूबर में हुए चुनाव में पासोक 300 सदस्यीय संसद में 160 सीटें जीत सत्ता में पहुंची। 2009 में गहराते संकट के उजागर होने और 2010 में बेल आउट पैकेज व कटौती कार्यक्रम थोपे जाने से दोनों प्रमुख पार्टियों की लोकप्रियता तेजी से गिरी। इसमें भी अधिक नुकसान पासोक को उठाना पड़ा। हालात वहां जा पहुंचे कि 2011 में जनाक्रोश का सामना करने से बचने के लिए दोनों पार्टियों ने एक गठबंधन कायम कर राष्ट्रीय एकता की सरकार के तहत यूरोपीय केन्द्रीय बैंक के पूर्व उपाध्यक्ष ल्यूकास पॉपेडेमास को सत्ता में पहुंचा दिया। इस प्रकार एक टेक्नोक्रेट सरकार का गठन कर दिया गया जो ग्रीस के पूंजीपति वर्ग व यूरोपीय साम्राज्यवादियों के हितों में कटौती कार्यक्रम लागू करने लगी।

परन्तु टेक्नोक्रेट सरकार का गठन भी दोनों प्रमुख पार्टियों को जनाक्रोश का शिकार होने से नहीं बचा पाया। मई 2012 के आम चुनावों में पासोक का मत प्रतिशत 43% से गिरकर 13% व न्यू डेमोक्रेसी का 33% से गिर कर 18% रह गया। 2011 के स्क्वायर संघर्ष पर सवार होकर कटौती कार्यक्रमों के विरोध में खुद को प्रस्तुत करने वाली पार्टी सिरिजा का मत प्रतिशत 4% से बढ़कर 16% जा पहुंचा। इस चुनाव से सरकार न बन पाने से ग्रीस में जून 2012 में पुनः आम चुनाव हुए। जिसमें सिरिजा 26.9% मत व 71 सीटें जीत दूसरे नम्बर की पार्टी बन कर उभरी। पहले स्थान पर रही न्यू डेमोक्रेसी (29%), पासोक (12%) व डेमोक्रेटिक लेफ्ट (6%) ने मिलकर सरकार बनायी।

जनवरी 2015 में हुए आम चुनावों में सिरिजा 36.3% मत व 149 सीटों के साथ सबसे बड़ी पार्टी बन कर उभरी और उसने इंडिपैंडेंट ग्रीक्स (ANEL) के साथ मिलकर सरकार का गठन किया। सिरिजा का यह उभार उसके कटौती कार्यक्रमों के विरोध में रुख के चलते हुआ था। परंतु सत्ता में आने के बाद इसके नेता व ग्रीस से प्रधानमंत्री अलेक्सिस सिप्रास ने पहले यूरोपीय संघ, यूरोपीय केन्द्रीय बैंक व अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष से सौदेबाजी का प्रयास किया जिसमें सफलता मिलती न देख उसने आत्मसमर्पण कर ग्रीस की जनता से गद्दारी का परिचय दिया। अब वह कटौती कार्यक्रम को मजबूरी के रूप में प्रदर्शित कर लागू करने लगा।

जून 2015 में अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष का कर्ज न चुका पाने के चलते ग्रीस के डिफॉल्टर घोषित हो जाने का खतरा पैदा हो गया। इस दौरान साम्राज्यवादी तिकड़ी ने नये बेल आउट पैकेज के जरिये ग्रीस की अर्थव्यवस्था को बचाने के नाम पर नये कटौती कार्यक्रमों को लागू करने का दबाव कायम किया। एक कुशल नेता का परिचय देते हुए सिप्रास ने इस बेलआउट पैकेज पर 5 जुलाई को जनमत संग्रह करवाया। जिसमें ग्रीस की जनता ने भारी मतों से इसे नकार दिया। पर जनमत संग्रह के नतीजों को तुरंत रद्दी की टोकरी में फेंक सिप्रास ने साम्राज्यवादी तिकड़ी से नये बेल आउट पैकेज व कटौती कार्यक्रमों के लिए समझौता कर लिया।

सिप्रास के इस कदम से सिरिजा के भीतर पनप रहे अंदरूनी अंतर्विरोध सतह पर आ गये और सिरिजा का एक धड़ा जो कटौती कार्यक्रमों का विरोधी था, सरकार के विरोध में चला गया। इस धड़े के विरोध में जाने के बावजूद सिप्रास सरकार को पासोक व न्यू डेमोक्रेसी के समर्थन के चलते कोई विशेष खतरा नहीं था। परंतु एक बार फिर कुशल पूंजीवादी नेता होने का परिचय देते हुए सिप्रास ने खुद के अल्पमत में आने की घोषणा करते हुए 20 सितम्बर को नये चुनावों की घोषणा कर दी।

20 सितम्बर के चुनावों की घोषणा के जरिये सिप्रास कटौती कार्यक्रमों के दुष्परिणाम आने से पूर्व ही अपनी सत्ता को मजबूत कर लेना चाहता था। इन चुनावों में सिरिजा से अलग हुए लोगों में से कुछ ने पॉपुलर यूनिटी गठबंधन कायम कर चुनावों में हिस्सा लिया। सिप्रास ने ग्रीस की जनता को यह बताते हुए कि कटौती कार्यक्रमों के प्रहार को सिरिजा ही कम कर सकती है, अपने लिए वोट मांगे। आशा के अनुरूप सिरिजा 35.5% मतों व 145 सीटों के साथ पुनः सत्ता में पहुंच गयी। इस चुनाव में मतदान में करीब 8% की गिरावट दर्ज की गयी।

इस पूरे संकट के काल में तथाकथित वामपंथी चेहरा लिए सिरिजा के उभार के साथ दूसरी प्रमुख राजनीतिक प्रवृत्ति जिसने अपना सिर तेजी से उठाया वह थी फासीवाद की प्रवृत्ति। फासीवादी पार्टी गोल्डेन डॉन का मत प्रतिशत 2009 में 0.3% से बढ़कर सितम्बर 15 में 7% जा पहुंचा। मौजूदा समय में ग्रीस की संसद में उसके 18 सांसद हैं।

सिरिजा (उग्र वाम का संघ) का गठन 2004 में कुछ वामपंथी पार्टियों व ग्रुपों ने मिलकर किया था। इनमें सबसे प्रमुख सिनैस्पीस्मास (कोअलिशन ऑफ लेफ्ट ऑफ मूवमेण्ट्स एण्ड इकॉलाजी) था अन्य संगठनों में ए.के.ओ.ए. [(AKOA) Renewing Communist ecological left)] के.जी.डी.ए. [KGDA (Movement for united in action left)] डी.ई.ए. [(DEA) (Internationalist Workers left)], और के.ओ.ई. [KOE (Communist organization of Greece)] प्रमुख थे। जून 2012 के चुनावों में जीत की संभावना देखते हुए इसे एक पार्टी में तब्दील कर दिया गया।

सिनैस्पीमास, जो कि सीरिजा का सबसे बड़ा घटक है, का गठन 1989 में ग्रीस की कम्युनिस्ट पार्टी के.के.ई. (KKE) और ग्रीक लेफ्ट (ग्रीस की कम्युनिस्ट पार्टी से 1968 में अलग हुई यूरो कम्युनिस्ट के.के.ई. इंटीरियर से निकली पार्टी) ने किया था। ग्रीस की कम्युनिस्ट पार्टी ने 1991 में सिनैस्पीमास से खुद को अलग कर लिया। ए.के.ओ.ए. यूरो कम्युनिस्ट पार्टी के.के.ई इंटीरियर से 80 के दशक के अंत में अलग हुआ दल था। तो के.ई.डी.ए. (KEDA) 90 के दशक की शुरुआत में के.के.ई से अलग हुआ था। डी.ई.ए. (DEA) ट्रॉट्स्कीपंथी सोशलिस्ट वर्कर्स पार्टी से अलग हुआ दल था तो के.ओ.ई. (KOE) के.के.ई. (KKE) से अलग हुई माओवादी पार्टी थी।

इस तरह सिरिजा के गठन में ट्रॉट्स्कीपंथी, यूरो कम्युनिस्ट, माओवादी, पर्यावरणवादी, नारीवादी आदि ढेरों विचारों के लोग शामिल थे। सिरिजा का उभार कटौती कार्यक्रमों के खिलाफ 2011 में खड़े हुए स्क्वायर आंदोलन में इसकी भागीदारी के चलते हुआ। 2012 व जनवरी 2015 इसकी जीत की संभावना को टालने के लिए यूरोपीय साम्राज्यवादियों ने अपने प्रचार तंत्र के जरिये पूरा जोर लगा दिया था।

सिरिजा की विभिन्न मसलों पर औपचारिक अवस्थितियां क्रमशः बदलती रही। इन बदलती अवस्थितियों का सारतत्व खुद को ग्रीस के पूंजीपति वर्ग की जरूरत के अनुरूप ढालना था। इसी के तहत बैंकों के राष्ट्रीयकरण की मांग को उसने छोड़ दिया। घरेलू न चुकाये जा सकने वाले कर्जों के सेटलमेंट की जगह वह आसान किश्तों की बात करने लगी। उसने टेलीकम्युनिकेशन, विद्युत, बंदरगाह, हवाई अड्डों, सड़कों के राष्ट्रीयकरण की बात ढीली करते हुए पूंजी की उपलब्धता के अनुरूप राष्ट्रीयकरण की बात करनी शुरू कर दी। बड़े पूंजीपतियों के मुनाफे पर 45% टैक्स की मांग भी उसने क्रमशः छोड़ दी। साथ ही धनवानों पर प्रत्यक्ष कर बढ़ाये जाने की पुरानी मांग से भी उसने

पल्ला झाड़ते हुए अप्रत्यक्ष कर को क्रमशः घटाने की बात करने लगी। इसी तरह मजदूरी व पेंशन को 2009 के स्तर पर लाने की बात छोड़ वह इसमें गिरावट को रोकने की बात करने लगी। छंटनी पर प्रतिबंध की बात त्यागते हुए वह केवल 2010 के छंटनी को आसान बनाने वाले कानून को खत्म करने की बात करने लगी। अस्थाई काम को खत्म कर स्थाई काम दिये जाने की मांग उसने छोड़ दी। इसी तरह बेरोजगारी भत्ते व पेंशन के संदर्भी अपने वायदों से वह बाद में गोल मोल करने लगी।

सिरिजा की इन नयी अवस्थितियों के चलते ही 2015 जनवरी में वह सत्ता पर पहुंचने में कामयाब रही। सत्ता में पहुंच कर इसने पाया कि इसके पास जनता से किये किसी वायदे को पूरा करने का मौका नहीं है। साम्राज्यवादी तिकड़ी के दबाव व उसके सत्ताशीन होते ही वित्त पूंजी के पलायन ने सिरिजा को वहां पहुंचा दिया कि वो न केवल तीसरे बेल आउट पैकेज की ओर गयी बल्कि उसने इसके साथ ही कटौती कार्यक्रमों को भी लागू करने पर सहमति प्रदर्शित कर दी।

कटौती कार्यक्रम के मुद्दे पर सिरिजा के कुछ हिस्से उससे अलग हो गये। इन अलग होने वालों में से कुछ ने पॉपुलर यूनिटी नामक नये गठबंधन का गठन किया पर सितंबर 15 के चुनाव में इस गठबंधन को कोई सफलता नहीं मिली। इन हिस्सों के अलग हो जाने के बाद सिरिजा ज्यादा खुली पूंजीवादी पार्टी में तब्दील हो गयी है। सिरिजा के 'वामपंथी' चरित्र का अंदाजा इसी बात से लग जाता है कि ग्रीस की संशोधनवादी कम्युनिस्ट पार्टी (KKE) तक इसे दक्षिणपंथी कह इसके साथ गठबंधन करने से इंकार करती रही है।

इस तरह ग्रीस का राजनीतिक संकट सिरिजा की गद्दारी के साथ जारी है पासोक को विस्मृति के कगार पर धकेलने वाली ग्रीस की जनता शीघ्र ही सिरिजा को भी जमीन पर ला पटकेगी।

ग्रीस के इस आर्थिक संकट के साथ जनता की पहलकदमी में हुए इजाफे को क्रांतिकारी दिशा में मोड़ने में सक्षम किसी क्रांतिकारी कम्युनिस्ट पार्टी का अभाव ग्रीस की जनता को रंग बिरंगी पूंजीवादी पार्टियों के छल का शिकार बनाता रहेगा। साथ ही यह तथाकथित 'वामपंथ' से जनता को उकता कर फासीवादी गोल्डेन डॉन की तरफ भी ले जा सकता है।

F: समाहार

ग्रीस के संकट के बारे में भविष्यवाणी करते हुए अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष की रिपोर्ट 2020-25 तक भी सरकारी कर्ज के 100% से नीचे जाने की संभावनायें नहीं देखती है। यह भी तब जब वे मनमाने तरीके से मान लेती है कि ग्रीस की अर्थव्यवस्था शीघ्र ही 2-3% की विकास दर पकड़ लेगी।

प्रारंभ में अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (जिसकी नेतृत्वकारी भूमिका में अमेरिकी साम्राज्यवादी है) ग्रीस के कर्ज संकट के लिए बेल आउट के बजाय कर्ज के एक हिस्से को समाप्त करने का सुझाव रख रहा था। पर इसके लिए यूरोपीय संघ व केन्द्रीय बैंक तैयार नहीं हुए। दरअसल कर्ज के एक हिस्से को समाप्त कर वे अपने देशों के वित्तीय संस्थाओं-बैंकों को दबाव में नहीं धकेलना चाहते थे। साथ ही यह रास्ता कहीं ज्यादा बड़े खतरे वाले देशों स्पेन-इटली-पुर्तगाल के साथ दोहराने का अर्थ यूरोपीय साम्राज्यवादियों की तबाही होता।

ग्रीस के इस संकट के साथ किसी न किसी रूप में यूरोपीय संघ व यूरो क्षेत्र के भविष्य का प्रश्न भी जुड़ा है। यूरोपीय एकीकरण की समूची प्रक्रिया के खतरे में पड़ने की पर्याप्त संभावनायें मौजूद हैं। खासकर तब जब कि ग्रीस समेत दक्षिण यूरोप के संकट के हाल फिलहाल हल होने की संभावना क्षीण हों। ग्रीस के इस संकट के हल के बतौर ग्रीस के भीतर ग्रीस के बुर्जुआ वर्ग का अधिकतर हिस्सा अपनी उम्मीदें बेल आउट पर टिकाये हुए है। दरअसल इस बेल आउट पैकेज का एक हिस्सा उसे भी हस्तांतरित हो रहा है। ग्रीस का बुर्जुआ वर्ग यूरोपीय एकीकरण की प्रक्रिया के साथ अपने हित नत्थी देख रहा है।

बुर्जुआ बुद्धिजीवियों का एक हिस्सा संकट के हल के बतौर ग्रीस के यूरो क्षेत्र से बाहर आ अपनी पुरानी मुद्रा अपना आगे बढ़ने की राह सुझा रहे हैं तो कुछ कल्याणकरी ढांचे को मजबूत बना घरेलू मांग बढ़ाने का नुस्खा पेश कर रहे हैं। कल्याणकारी राज्य का ख्वाब पेश करने वाली व कटौती कार्यक्रमों के विरोध में खड़ी पार्टियां तेजी से लोकप्रियता ग्रहण कर रही हैं। यह ग्रीस की जनता के जीवन स्तर के संकट के काल में नीचे ढकेले जाने का ही परिणाम है।

ग्रीस के संकट का हल नीम हकीमी नुस्खों में नहीं बल्कि ग्रीस की समूची उत्पादन वितरण की प्रणाली के क्रांतिकारी रूपान्तरण में है। ग्रीस के संकट का हल पूंजीवाद में नहीं समाजवादी क्रांति में है।

■■■